Engineering Universe for Scientific Research and Management
ISSN (Online): 2319-3069
Vol. XVII Issue XI
November 2025

विभिन्न आय-स्तर वाले देशों में कर सुधारों और आर्थिक प्रगति का तुलनात्मक मूल्यांकन

पोषण कुमार निषाद[1], डॉ. पूनम ज्ञान चंदानी[2]
शोध छात्र, राजनीति विज्ञान विभाग, आईएसबीएम यूनिवर्सिटी[1]
पर्यवेक्षक, राजनीति विज्ञान विभाग, आईएसबीएम यूनिवर्सिटी[2]

सार

कर नीति किसी भी राष्ट्र की राजनीतिक अर्थव्यवस्था का केन्द्रीय स्तम्भ है। प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य उच्च-आय, मध्यम-आय एवं निम्न-आय वाले देशों में कर सुधारों और आर्थिक प्रगति के मध्य तुलनात्मक सम्बन्धों का मूल्यांकन करना है। इस अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य विभिन्न आय-स्तर के देशों में कर-जीडीपी अनुपात की प्रवृत्तियों का विश्लेषण करना तथा कर संरचना में सुधारों के आर्थिक विकास पर पड़ने वाले प्रभावों की तुलनात्मक समीक्षा करना है। शोध में तुलनात्मक-विश्लेषणात्मक पद्धति अपनाई गई है, जिसमें ओईसीडी, विश्व बैंक एवं अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष के द्वितीयक आँकड़ों का उपयोग किया गया है। परिकल्पना यह है कि कर सुधार उच्च-आय वाले देशों में अधिक राजस्व दक्षता प्रदान करते हैं, जबकि निम्न-आय वाले देशों में संस्थागत कमजोरियाँ इनकी प्रभावशीलता को सीमित करती हैं। परिणाम दर्शाते हैं कि 2024 में ओईसीडी देशों का औसत कर-जीडीपी अनुपात 34.1 प्रतिशत रहा, जबकि निम्न-आय देशों में यह मात्र 13.5 प्रतिशत था। निष्कर्षतः, कर सुधारों की सफलता संस्थागत क्षमता, डिजिटलीकरण एवं राजनीतिक इच्छाशक्ति पर निर्भर करती है।

मुख्य शब्द: कर सुधार, आर्थिक प्रगति, कर-जीडीपी अनुपात, तुलनात्मक राजनीतिक अर्थव्यवस्था, राजकोषीय नीति

1. प्रस्तावना

कर प्रणाली किसी भी राज्य की सम्प्रभुता एवं शासन-क्षमता का मूलभूत आधार है। राजनीतिक विज्ञान के परिप्रेक्ष्य में, करारोपण केवल राजस्व संग्रहण का साधन नहीं, अपितु राज्य-नागरिक सम्बन्धों, सामाजिक अनुबन्ध एवं पुनर्वितरणात्मक न्याय का राजनीतिक उपकरण है। विश्व बैंक के अनुसार, निम्न-आय देशों में सरकारी व्यय जीडीपी का लगभग 20 प्रतिशत है, जबकि उच्च-आय देशों में यह 33 प्रतिशत से अधिक है (विश्व बैंक, 2024)। यह विषमता कर-क्षमता में अन्तर का प्रत्यक्ष परिणाम है। वैश्विक स्तर पर पिछले चार दशकों में कॉर्पोरेट कर दरों में निरन्तर गिरावट देखी गई है 1980 में वैश्विक औसत वैधानिक कॉर्पोरेट कर दर 40.18 प्रतिशत थी, जो 2024 में घटकर 23.51 प्रतिशत हो गई (टैक्स फाउण्डेशन, 2024)। यह परिवर्तन वैश्वीकरण, कर प्रतिस्पर्धा एवं निवेश आकर्षण की राजनीतिक रणनीतियों का परिणाम है। ओईसीडी के अनुसार, 2024 में 38 ओईसीडी देशों का औसत कर-जीडीपी अनुपात बढ़कर 34.1 प्रतिशत हो गया, जो अब तक का सर्वोच्च स्तर है (ओईसीडी, 2025)। इसके विपरीत, अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष के आकलन के अनुसार, निम्न-आय देशों में कर-जीडीपी अनुपात में 9 प्रतिशतांक तक की वृद्धि सम्भव है, यदि कर प्रणाली सुधार और संस्थागत क्षमता निर्माण को समन्वित किया जाए (बेनिटेज़ एवं अन्य, 2023)।

भारत जैसे विकासशील देशों में जीएसटी सुधार (2017) ने अप्रत्यक्ष कर प्रणाली को एकीकृत किया। वित्तीय वर्ष 2024-25 में सकल जीएसटी संग्रह 22.08

लाख करोड़ रुपये के ऐतिहासिक स्तर पर पहुँचा, जो पिछले वर्ष की तुलना में 9.4 प्रतिशत की वृद्धि दर्शाता है (भारत सरकार, 2025)। अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष ने भारत की जीडीपी वृद्धि दर 2025-26 के लिए 6.6 प्रतिशत अनुमानित की है, जिसमें जीएसटी सुधारों की महत्त्वपूर्ण भूमिका मानी गई है (आईएमएफ, 2025)। इस प्रकार, कर सुधारों का आर्थिक प्रगति पर प्रभाव विभिन्न आय-स्तरों पर भिन्न-भिन्न होता है, जो इस शोध की मूल समस्या है।

2. साहित्य समीक्षा

कर सुधारों और आर्थिक विकास के सम्बन्ध में विपुल शोध साहित्य उपलब्ध है। अलीनाघी एवं रीड (2021) ने ओईसीडी देशों पर मेटा-विश्लेषण में पाया कि करों का आर्थिक विकास पर प्रभाव अनिश्चित एवं संदर्भ-निर्भर है, जो यह स्थापित करता है कि कर नीति का मूल्यांकन समग्र संस्थागत ढाँचे में किया जाना चाहिए। ली एवं गॉर्डन (2005) ने 70 देशों के आँकड़ों का विश्लेषण कर निष्कर्ष निकाला कि वैधानिक कॉर्पोरेट कर दरों में कमी आर्थिक विकास दर में वृद्धि से सम्बद्ध है। इसी क्रम में, अर्नाल्ड (2008) ने ओईसीडी देशों में कॉर्पोरेट करों का उत्पादकता पर नकारात्मक प्रभाव प्रमाणित किया। विकासशील देशों के सन्दर्भ में, दिन्ह एवं जियांग (2023) ने वियतनाम में कर नीति सुधारों का सामान्य संतुलन मॉडल के माध्यम से विश्लेषण किया और पाया कि मूल्य वर्धित कर में सुधार ने जीडीपी वृद्धि को सकारात्मक रूप से प्रभावित किया। भारतीय सन्दर्भ में, नियोग एवं गौर (2020) ने कर राजस्व और आर्थिक विकास के मध्य दीर्घकालिक सकारात्मक सम्बन्ध प्रमाणित किया। गार्ग, नारवाल एवं कुमार (2023) ने जीएसटी सुधारों के भारतीय अर्थव्यवस्था पर आनुभविक प्रभाव का विश्लेषण किया और पाया कि एकीकृत कर प्रणाली ने राज्यों की राजस्व दक्षता में सुधार किया।

तुलनात्मक अध्ययनों में, हकीम (2020) ने विकसित एवं विकासशील देशों में अप्रत्यक्ष करों का आर्थिक विकास पर सकारात्मक प्रभाव पाया। इसके विपरीत, साबा एवं मोंकम (2024) ने उप-सहारा अफ्रीका में राजकोषीय नीति की प्रभावशीलता को संस्थागत गुणवत्ता से जोड़ा। मिरोविच, मिलेंकोविच एवं म्लादेनोविच (2023) ने पश्चिमी बाल्कन देशों में कर राजस्व की अस्थिरता और आर्थिक विकास के मध्य नकारात्मक सम्बन्ध प्रमाणित किया। हसन एवं अन्य (2022) ने 47 विकसित एवं 90 विकासशील देशों के पैनल डेटा का विश्लेषण कर निष्कर्ष निकाला कि प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष करों का आर्थिक विकास पर प्रभाव देशों की आय-श्रेणी के अनुसार भिन्न होता है। ओईसीडी (2024) की कर नीति सुधार रिपोर्ट के अनुसार, 2023 में कॉर्पोरेट कर दरों में वृद्धि करने वाले देशों की संख्या पहली बार कमी करने वालों से अधिक रही, जो राजस्व आवश्यकताओं एवं समानता की राजनीतिक माँगों को प्रतिबिम्बित करता है। यह साहित्य स्पष्ट करता है कि कर सुधारों का प्रभाव सार्वभौमिक नहीं, अपितु संस्थागत, राजनीतिक एवं संरचनात्मक कारकों द्वारा निर्धारित होता है।

3. उद्देश्य

1. विभिन्न आय-स्तर (उच्च-आय, मध्यम-आय एवं निम्न-आय) वाले देशों में कर-जीडीपी अनुपात, कर संरचना एवं कॉर्पोरेट कर दरों की प्रवृत्तियों का तुलनात्मक विश्लेषण करना।
2. कर सुधारों की आर्थिक प्रगति (जीडीपी वृद्धि, राजस्व संग्रह एवं निवेश) पर पड़ने वाले विभेदकारी प्रभावों का मूल्यांकन करना तथा इन प्रभावों को निर्धारित करने वाले संस्थागत एवं राजनीतिक कारकों की पहचान करना।

4. शोध प्रविधि

प्रस्तुत अध्ययन तुलनात्मक-विश्लेषणात्मक शोध अभिकल्प पर आधारित है, जो राजनीतिक विज्ञान में तुलनात्मक राजनीतिक अर्थव्यवस्था की परम्परा से प्रेरित है। शोध में द्वितीयक आँकड़ों का उपयोग किया गया है, जिनके प्रमुख स्रोत ओईसीडी राजस्व सांख्यिकी (2025), विश्व बैंक विश्व विकास संकेतक, अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष राजकोषीय मॉनिटर (2025), टैक्स फाउण्डेशन कॉर्पोरेट कर सांख्यिकी (2024-25) तथा भारत सरकार का जीएसटी संग्रह डेटा (2025) हैं।

प्रतिदर्श के रूप में विश्व बैंक की आय-वर्गीकरण प्रणाली के आधार पर तीन श्रेणियों — उच्च-आय देश (जैसे डेनमार्क, फ्रांस, जर्मनी), उच्च-मध्यम-आय देश (जैसे भारत, ब्राज़ील, दक्षिण अफ्रीका) एवं निम्न-आय देश (जैसे अफ्रीकी उप-सहारा राष्ट्र) के प्रतिनिधि देशों का चयन किया गया है। विश्लेषण का समय-काल 2000 से 2024 तक है। शोध उपकरण के रूप में सांख्यिकीय सारणियों, प्रवृत्ति विश्लेषण एवं तुलनात्मक मैट्रिक्स का उपयोग किया गया है। आँकड़ा विश्लेषण तकनीकों में वर्णनात्मक सांख्यिकी (औसत, प्रतिशत, वृद्धि दर), प्रवृत्ति विश्लेषण एवं अन्तर-समूह तुलना सम्मिलित हैं। सभी आँकड़े अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं के आधिकारिक डेटाबेस से सत्यापित हैं। अध्ययन की सीमा यह है कि यह प्राथमिक आँकड़ा संग्रह पर आधारित नहीं है, तथापि उपयोग किए गए द्वितीयक स्रोतों की प्रामाणिकता एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्वीकार्यता इस सीमा को न्यूनतम करती है।

5. परिणाम

तालिका 1: आय-समूह के अनुसार औसत कर-जीडीपी अनुपात (2022)

आय-समूह	औसत कर-जीडीपी अनुपात (%)	पूर्व वर्ष से परिवर्तन (प्रतिशतांक)
उच्च-आय देश (HICs)	31.6	-0.1
मध्यम-आय देश (MICs)	18.9	+0.7
निम्न-आय देश (LICs)	13.5	+0.3
ओईसीडी औसत (2024)	34.1	+0.3

स्रोत: ओईसीडी, कर नीति सुधार 2025; ओईसीडी राजस्व सांख्यिकी 2025।

तालिका 1 से स्पष्ट है कि उच्च-आय देशों और निम्न-आय देशों के कर-जीडीपी अनुपात में लगभग 18 प्रतिशतांक का विशाल अन्तर विद्यमान है। 2022 में मध्यम-आय देशों ने 0.7 प्रतिशतांक की सर्वाधिक वृद्धि दर्ज की, जो इन देशों में कर आधार विस्तार के प्रयासों को प्रतिबिम्बित करती है। उच्च-आय देशों में मामूली गिरावट कर राजस्व की तुलना में जीडीपी की तीव्रतर वृद्धि के कारण हुई। 2024 में ओईसीडी औसत 34.1 प्रतिशत के ऐतिहासिक उच्चतम स्तर पर पहुँच गया।

तालिका 2: प्रमुख उच्च-आय देशों का कर-जीडीपी अनुपात (2024, अनन्तिम)

देश	कर-जीडीपी अनुपात (%)	प्रमुख कर स्रोत
डेनमार्क	45.2	व्यक्तिगत आयकर, वैट
फ्रांस	43.5	सामाजिक अंशदान, वैट
ऑस्ट्रिया	43.4	सामाजिक अंशदान, वैट
इटली	43.2	वैट, कॉर्पोरेट कर
मेक्सिको (न्यूनतम)	18.3	उपभोग कर

स्रोत: ओईसीडी राजस्व सांख्यिकी 2025।

तालिका 2 के अनुसार, 2024 में डेनमार्क ने लगातार दूसरे वर्ष ओईसीडी देशों में सर्वोच्च कर-जीडीपी अनुपात (45.2%) दर्ज किया। यह नॉर्डिक कल्याणकारी राज्य मॉडल की विशेषता है, जहाँ व्यापक व्यक्तिगत आयकर आधार एवं 25 प्रतिशत वैट दर प्रमुख राजस्व स्रोत हैं। फ्रांस में सामाजिक अंशदान कुल कर राजस्व का 45 प्रतिशत है। मेक्सिको का न्यूनतम अनुपात (18.3%) विकासशील-उच्च-आय श्रेणी की संरचनात्मक चुनौतियों को दर्शाता है।

तालिका 3: वैश्विक औसत वैधानिक कॉर्पोरेट कर दर की प्रवृत्ति (2000-2024)

वर्ष	वैश्विक औसत कॉर्पोरेट कर दर (%)
2000	28.0
2010	24.3
2019	21.7
2023	21.1
2024	21.1

स्रोत: ओईसीडी कॉर्पोरेट कर सांख्यिकी 2024; टैक्स फाउण्डेशन 2024।

तालिका 3 से स्पष्ट है कि 2000 से 2019 के मध्य वैश्विक औसत कॉर्पोरेट कर दर में 6.3 प्रतिशतांक की उल्लेखनीय गिरावट हुई, जो वैश्विक कर प्रतिस्पर्धा की राजनीति को दर्शाती है। तथापि, 2019 के बाद यह दर स्थिर हो गई है 2023 एवं 2024 दोनों में यह 21.1 प्रतिशत रही। यह स्थिरता ओईसीडी पिलर-2 वैश्विक न्यूनतम कर (15%) पहल के प्रभाव को प्रतिबिम्बित करती है, जिसमें 2025 तक 140 से अधिक देशों ने सहमति व्यक्त की है।

तालिका 4: भारत का सकल जीएसटी संग्रह (2020-21 से 2024-25)

वित्तीय वर्ष	सकल जीएसटी संग्रह (लाख करोड़ ₹)	वार्षिक वृद्धि दर (%)
2020-21	11.37	—
2021-22	14.83	30.4
2022-23	18.08	21.9
2023-24	20.18	11.6
2024-25	22.08	9.4

स्रोत: भारत सरकार, प्रेस सूचना ब्यूरो, 2025।

तालिका 4 भारत में जीएसटी सुधार की सफलता का प्रत्यक्ष प्रमाण है। पाँच वर्षों में सकल जीएसटी संग्रह लगभग दोगुना हो गया — 11.37 लाख करोड़ से बढ़कर 22.08 लाख करोड़ रुपये। चक्रवृद्धि वार्षिक वृद्धि दर (सीएजीआर) लगभग 18 प्रतिशत रही। करदाता आधार 2017 में 66.5 लाख से बढ़कर 2025 में 1.51 करोड़ हो गया, जो अर्थव्यवस्था के औपचारिकीकरण का संकेतक है। यह दर्शाता है कि संरचनात्मक कर सुधार मध्यम-आय देशों में राजस्व क्षमता में नाटकीय सुधार ला सकते हैं।

तालिका 5: आय-समूह के अनुसार प्रभावी कॉर्पोरेट कर दर (मध्यांक, 2023)

आय-समूह	प्रभावी कॉर्पोरेट कर दर - मध्यांक (%)
उच्च-आय देश	16.3
उच्च-मध्यम-आय देश	15.1
निम्न-मध्यम-आय देश	20.7
निम्न-आय देश	21.7

स्रोत: ओईसीडी कॉर्पोरेट कर सांख्यिकी 2024; ईवाई ग्लोबल रिपोर्ट 2023।

तालिका 5 एक विरोधाभासी परन्तु राजनीतिक रूप से महत्त्वपूर्ण तथ्य उजागर करती है निम्न-आय देशों में प्रभावी कॉर्पोरेट कर दर (21.7%) उच्च-आय देशों (16.3%) से 5.4 प्रतिशतांक अधिक है। यह इसलिए है क्योंकि उच्च-आय देश कर प्रोत्साहन, अनुसन्धान-विकास कर छूट एवं अन्तर्राष्ट्रीय कर नियोजन का लाभ उठाते हैं, जबकि निम्न-आय देशों में सीमित कर आधार के कारण ऊँची दरें लगानी पड़ती हैं। यह वैश्विक कर न्याय की राजनीतिक बहस का केन्द्रीय मुद्दा है।

तालिका 6: प्रमुख देशों की जीडीपी वृद्धि दर एवं कर सुधार स्थिति (2024-25)

देश	आय-श्रेणी	जीडीपी वृद्धि दर (%)	प्रमुख कर सुधार
भारत	उच्च-मध्यम	6.5 (2024-25)	जीएसटी सरलीकरण (दो-स्लैब)
अमेरिका	उच्च	2.0 (2025)	टीसीजेए विस्तार
ब्राज़ील	उच्च-मध्यम	2.1 (2024)	वैट कैशबैक
जर्मनी	उच्च	0.2 (2024)	ऊर्जा कर सुधार
नाइजीरिया	निम्न-मध्यम	3.3 (2024)	कर प्रशासन डिजिटलीकरण

स्रोत: आईएमएफ विश्व आर्थिक परिदृश्य, अक्टूबर 2025; ओईसीडी कर नीति सुधार 2024।

तालिका 6 से स्पष्ट है कि भारत ने सर्वाधिक जीडीपी वृद्धि दर (6.5%) के साथ व्यापक जीएसटी सुधार लागू किये, जबकि जर्मनी जैसे उच्च-आय देश में मन्द वृद्धि (0.2%) के बावजूद कर-जीडीपी अनुपात उच्च बना रहा। यह प्रमाणित करता है कि कर सुधारों का आर्थिक प्रभाव देश की संरचनात्मक स्थिति, संस्थागत क्षमता एवं राजनीतिक-आर्थिक परिवेश पर निर्भर करता है। भारत का जीएसटी 2.0 सुधार आईएमएफ द्वारा टैरिफ प्रभाव को कम करने में सहायक माना गया है।

6. विमर्श

प्रस्तुत शोध के परिणाम दोनों उद्देश्यों की पुष्टि करते हैं। प्रथम उद्देश्य के सन्दर्भ में, तालिका 1 एवं तालिका 2 के आँकड़े स्पष्ट रूप से प्रमाणित करते हैं कि विभिन्न आय-स्तर वाले देशों में कर-जीडीपी अनुपात में गहन विषमता विद्यमान है। उच्च-आय देशों का औसत कर-जीडीपी अनुपात (31.6%) निम्न-आय देशों (13.5%) से दोगुने से भी अधिक है। यह विषमता केवल आर्थिक नहीं, अपितु राजनीतिक है — गैस्पर एवं अन्य (2024) के अनुसार, जब किसी देश का कर-जीडीपी अनुपात 15 प्रतिशत की सीमा को पार करता है, तभी निरन्तर आर्थिक विकास की प्रक्रिया गति पकड़ती है।

तालिका 3 से प्रकट होता है कि कॉर्पोरेट कर दरों में दीर्घकालिक गिरावट 2019 के बाद रुक गई है, जो ओईसीडी पिलर-2 वैश्विक न्यूनतम कर पहल का प्रत्यक्ष राजनीतिक परिणाम है। द्वितीय उद्देश्य के

सन्दर्भ में, तालिका 4 भारत जैसे मध्यम-आय देश में कर सुधार की सफलता का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करती है। जीएसटी लागू होने के बाद करदाता आधार में 127 प्रतिशत की वृद्धि हुई और राजस्व संग्रह दोगुना हो गया। तालिका 6 के अनुसार, भारत की 6.5 प्रतिशत जीडीपी वृद्धि दर अन्य प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं से कहीं अधिक है, जिसमें जीएसटी सुधारों की भूमिका आईएमएफ (2025) द्वारा स्वीकृत है। दिन्ह एवं जियांग (2023) का वियतनाम पर किया गया अध्ययन भी इस निष्कर्ष की पुष्टि करता है कि अप्रत्यक्ष कर सुधार विकासशील देशों में आर्थिक प्रगति के प्रभावी उपकरण हैं।

तालिका 5 का विश्लेषण वैश्विक कर न्याय के राजनीतिक प्रश्न को उठाता है। निम्न-आय देशों में उच्चतर प्रभावी कर दर (21.7%) यह दर्शाती है कि ये देश अन्तर्राष्ट्रीय कर प्रतिस्पर्धा में प्रतिकूल स्थिति में हैं, क्योंकि उच्च-आय देश कर प्रोत्साहनों एवं लाभ स्थानान्तरण के माध्यम से अपनी प्रभावी दर कम रखते हैं। यह ओईसीडी कॉर्पोरेट कर सांख्यिकी (2024) के निष्कर्षों से मेल खाता है।
हसन एवं अन्य (2022) का 137 देशों पर किया गया अध्ययन भी इसकी पुष्टि करता है कि प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष करों का आर्थिक प्रभाव आय-स्तर के अनुसार भिन्न होता है। संस्थागत कारकों की भूमिका अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। बेनिटेज़ एवं अन्य (2023) के आईएमएफ अध्ययन के अनुसार, निम्न-आय देशों में संस्थागत सुधार जैसे भ्रष्टाचार में कमी एवं कर प्रशासन का डिजिटलीकरण कर-जीडीपी अनुपात में अतिरिक्त 2.3 प्रतिशतांक की वृद्धि कर सकते हैं। साबा एवं मोंकम (2024) का उप-सहारा अफ्रीका पर अध्ययन भी इसकी पुष्टि करता है कि संस्थागत गुणवत्ता राजकोषीय नीति की प्रभावशीलता का निर्णायक कारक है। इस प्रकार, कर सुधारों की सफलता तकनीकी कर ढाँचे से अधिक राजनीतिक इच्छाशक्ति, शासन गुणवत्ता एवं संस्थागत परिपक्वता पर निर्भर करती है जो राजनीतिक विज्ञान के विश्लेषण का मूल तत्त्व है।

7. निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि कर सुधारों और आर्थिक प्रगति का सम्बन्ध सार्वभौमिक नहीं, अपितु देशों के आय-स्तर, संस्थागत क्षमता एवं राजनीतिक संरचना द्वारा निर्धारित होता है। उच्च-आय देशों में उच्च कर-जीडीपी अनुपात (34.1%) व्यापक कल्याणकारी राज्य को वित्तपोषित करता है, जबकि निम्न-आय देशों में 13.5 प्रतिशत का अनुपात विकास के लिए अपर्याप्त राजकोषीय स्थान दर्शाता है। भारत का जीएसटी सुधार प्रमाणित करता है कि संरचनात्मक कर सुधार मध्यम-आय देशों में राजस्व क्षमता एवं आर्थिक विकास को सकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकते हैं। वैश्विक न्यूनतम कर जैसी पहलें कर न्याय की दिशा में महत्त्वपूर्ण हैं, परन्तु निम्न-आय देशों को संस्थागत क्षमता निर्माण, डिजिटलीकरण एवं कर आधार विस्तार पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। कर नीति अन्ततः एक राजनीतिक निर्णय है और इसकी सफलता शासन की गुणवत्ता एवं राजनीतिक प्रतिबद्धता पर निर्भर करती है।

सन्दर्भ सूची

1. अलीनाघी, एन., एवं रीड, डब्ल्यू. आर. (2021)। टैक्सेज़ एण्ड इकोनॉमिक ग्रोथ इन ओईसीडी कण्ट्रीज़: ए मेटा-एनालिसिस। *पब्लिक फाइनेंस रिव्यू*, 49(1), 3-40। https://doi.org/10.1177/1091142120961775
2. अर्नाल्ड, जे. (2008)। डू टैक्स स्ट्रक्चर्स अफेक्ट एग्रीगेट इकोनॉमिक ग्रोथ? *ओईसीडी इकोनॉमिक्स डिपार्टमेंट वर्किंग पेपर्स*, नं. 643। https://doi.org/10.1787/236001777843
3. बेनिटेज़, जे. सी., एवं अन्य (2023)। बिल्डिंग टैक्स कैपेसिटी इन डेवलपिंग कण्ट्रीज़। *आईएमएफ स्टाफ डिस्कशन नोट*, 2023/006। https://doi.org/10.5089/9798400246098.006
4. भारत सरकार (2025)। रिकॉर्ड ग्रॉस जीएसटी कलेक्शन इन 2024-25। प्रेस सूचना ब्यूरो। https://www.pib.gov.in/PressNoteDetails.aspx?id=154789
5. गार्ग, एस., नारवाल, के. पी., एवं कुमार, एस. (2023)। इकोनॉमिक इम्पैक्ट ऑफ जीएसटी रिफॉर्म्स ऑन इण्डियन इकोनॉमी: एन एम्पिरिकल एनालिसिस।

ओडिशा जर्नल ऑफ कॉमर्स, 44, 1-16। https://doi.org/10.54063/ojc.2023.v44i03.01

6. गार्ग, एस., नारवाल, के. पी., एवं कुमार, एस. (2025)। इन्वेस्टिगेटिंग द इम्प्लिकेशन्स ऑफ जीएसटी रेवेन्यू ऑन इकोनॉमिक ग्रोथ। *स्टैटिस्टिक्स एण्ड पब्लिक पॉलिसी*। https://doi.org/10.1080/2330443X.2024.2436196
7. दिन्ह, एच. टी., एवं जियांग, एल. टी. (2023)। टैक्स पॉलिसी रिफॉर्म एण्ड इकोनॉमिक ग्रोथ इन वियतनाम। *जर्नल ऑफ एशियन इकोनॉमिक्स*, 85, 101456। https://doi.org/10.1016/j.asieco.2023.101456
8. नियोग, बी., एवं गौर, पी. (2020)। टैक्स रेवेन्यू एण्ड इकोनॉमिक ग्रोथ नेक्सस: एम्पिरिकल एविडेंस फ्रॉम इण्डिया। *इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ इकोनॉमिक पॉलिसी इन इमर्जिंग इकोनॉमीज़*, 13(1), 34-50। https://doi.org/10.1504/IJEPEE.2020.106680
9. हसन, एस. एम., एवं अन्य (2022)। इम्पैक्ट ऑफ डायरेक्ट एण्ड इनडायरेक्ट टैक्सेज़ ऑन इकोनॉमिक डेवलपमेंट। *कॉग्नेट इकोनॉमिक्स एण्ड फाइनेंस*, 10(1), 2141423। https://doi.org/10.1080/23322039.2022.2141423
10. हकीम, टी. ए. (2020)। डायरेक्ट वर्सेज़ इनडायरेक्ट टैक्सेज़: इम्पैक्ट ऑन इकोनॉमिक ग्रोथ। *जर्नल ऑफ इकोनॉमिक एण्ड एडमिनिस्ट्रेटिव साइंसेज़*, 36(2), 50-67। https://doi.org/10.1108/JEAS-06-2019-0066
11. ली, वाई., एवं गॉर्डन, आर. एच. (2005)। टैक्स स्ट्रक्चर एण्ड इकोनॉमिक ग्रोथ। *जर्नल ऑफ पब्लिक इकोनॉमिक्स*, 89(5-6), 1027-1043। https://doi.org/10.1016/j.jpubeco.2004.07.002
12. मिरोविच, वी., मिलेंकोविच, डी., एवं म्लादेनोविच, आई. (2023)। टैक्स रेवेन्यू वोलैटिलिटी एण्ड इट्स इम्पैक्ट ऑन इकोनॉमिक ग्रोथ। *इकोनॉमिक रिसर्च-एकोनॉम्स्का इस्ट्राज़ीवान्या*, 36(1), 1410-1432। https://doi.org/10.1080/1331677X.2022.2142813
13. साबा, ए. आर., एवं मोंकम, एन. (2024)। फिस्कल पॉलिसी एण्ड इंस्टीट्यूशनल क्वालिटी इन सब-सहारन अफ्रीका। *जर्नल ऑफ अफ्रीकन इकोनॉमीज़*, 33(2), 234-256। https://doi.org/10.1093/jae/ejad025
14. ओईसीडी (2024)। टैक्स पॉलिसी रिफॉर्म्स 2024: ओईसीडी एण्ड सिलेक्टेड पार्टनर इकोनॉमीज़। ओईसीडी पब्लिशिंग, पेरिस। https://doi.org/10.1787/c3686f5e-en
15. ओईसीडी (2025)। रेवेन्यू स्टैटिस्टिक्स 2025। ओईसीडी पब्लिशिंग, पेरिस। https://www.oecd.org/en/publications/2025/12/revenue-statistics-2025_07ca0a8e.html
16. टैक्स फाउण्डेशन (2024)। कॉर्पोरेट टैक्स रेट्स अराउण्ड द वर्ल्ड, 2024। https://taxfoundation.org/data/all/global/corporate-tax-rates-by-country-2024/
17. आईएमएफ (2025)। आईएमएफ कण्ट्री रिपोर्ट नं. 25/314: इण्डिया — 2025 आर्टिकल IV कंसल्टेशन। https://www.imf.org/en/news/articles/2025/11/24/pr-25392-india-imf-executive-board-concludes-2025-article-iv-consultation
18. विश्व बैंक (2024)। टैक्सेज़ एण्ड गवर्नमेंट रेवेन्यू। https://www.worldbank.org/en/topic/taxes-and-government-revenue
19. गैस्पर, वी., एवं अन्य (2024)। टैक्सिंग फॉर ग्रोथ: रिविज़िटिंग द 15 परसेंट थ्रेशोल्ड। *विश्व बैंक पॉलिसी रिसर्च वर्किंग पेपर*। https://documents1.worldbank.org/curated/en/099062724151523023/pdf/P1778861e0c40b081186a61ced16cac6cde.pdf

ओईसीडी (2024)। कॉर्पोरेट टैक्स स्टैटिस्टिक्स 2024। ओईसीडी पब्लिशिंग, पेरिस। https://www.oecd.org/content/dam/oecd/en/publications/reports/2024/07/corporate-tax-statistics-2024_ce7e5701/9c27d6e8-en.pdf.